हिंदी का बहुआयामी विश्लेषण

वैश्वीकरण और उदारीकरण के मौजूद दौर में एक तरफ सूचना प्रौद्योगिकी के कंधों पर आरूढ़ होकर हिंदी तीव्र गति से भारतवर्ष ही नहीं बल्कि समूचे विश्व के समक्ष एक प्रभावशाली एवं सशक्त भाषा के रूप में प्रकट हो चुकी है, तो दूसरी तरफ हिंदी सहित अन्य देशीय भाषाओं के लिए नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। भाषाओं के विलुप्त होने से इस युग में कई भाषाविदों का मानना है कि भविष्य में जो भाषाएँ बहुभाषिक कंप्यूटर, इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों में अपने शब्दकोश, विश्वकोश, व्याकरण, साहित्य तथा ज्ञान के विविध भंडारों के साथ दर्ज होंगी, उनकी उत्तरजीविता निर्विवाद है। हिंदी इस दिशा में अपेक्षित गति और ऊर्जा के साथ अग्रसर है।

इस परिवर्तनशील परिदृश्य में हिंदी अपने विविधरूपा अवतार में भारत की सामासिक संस्कृति को एक सूत्र में बाँध रही है। मीडिया की हिंदी को ही लें, जो अब नित नए रूप और फ्लेवर में इस्तेमाल की जा रही है। दूसरी तरफ हिंदी के अन्य प्रयोजनमूलक स्वरूप भी अपनी-अपनी शब्दावली और शैलीगत अभिलक्षणों का सृजन कर रहे हैं। इन सबके बीच सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तरों पर मानकीकरण के प्रयास भी जारी हैं। हिंदी को एक विशाल जनसमूह की आवाज़ बनाने का कार्य बॉलीवुड का हिंदी सिनेमा बखूबी कर रहा है। हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़ी संस्थओं ने हिंदी को अरुणाचल प्रदेश की तवाङ घाटी से लेकर केरल के सुदूर ग्रामीण अंचलों तक पहुँचा दिया है। हिंदी समझने और बोलने वाला एक बड़ा प्रवासी समुदाय अनेक वर्षों से पूरे विश्व में फैला हुआ है। हिंदी की इसी रोचक विकास यात्रा को समेटती है प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी की पुस्तक 'हिंदी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य (2009)।

पुस्तक में प्रो. गोस्वामी के हिंदी से संबंधित पूर्व-प्रकाशित विभिन्न शोधपूर्ण आलेखों को संकलित किया गया है। हिंदी भाषा में वैज्ञानिक शोध एवं उसके शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में प्रो.

गोस्वामी के सुदीर्घ अनुभव एवं विस्तृत कार्य को देखते हुए संकलन की उपादेयता और सार्थकता को कदापि नकारा नहीं जा सकता। पुस्तक में कुल 16 लेखों के साथ एक परिशिष्टीय आलेख को सम्मिलित किया गया है।

हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर 'हिंदी भाष की विकास यात्रा' शीर्षक लेख प्रकाश डालता है। लेख में हिंदी के विभिन्न संदर्भों- भौगोलिक, साहित्यिक व प्रयोग-विस्तार पर विस्तार से चर्चा की गई है। मीडिया की भाषा पर लेखक ने बड़ी बारीकी से चर्चा की है।

प्रो. गोस्वामी लिखते हैं : *''जनसंचार की भाषा का स्वरूप विशिष्ट तो होता है ही, किंतु यह विज्ञान और मेडिकल की भाषा की भाँति तकनीकी नहीं होती। यद्यपि यह साहित्यिक नहीं होती तो आमफहम भाषा भी नहीं होती। इसकी स्थिति दोनों प्रवृत्तियों के बीच की होती हैं। इसमें प्रयुक्त भाषा का प्रभाव-क्षेत्र व्यापक है, इसलिए लोक व्यवहार में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसका प्रयोग पहले संवाददाता ही करते हैं। इस प्रकार जनसंचार की भाषा में सर्वजन सुबोधता, प्रयोगधर्मिता और लचीलापन होता है जो उसे विशिष्ट रूप प्रदान करता है।''* (पृष्ठ संख्या-32)

हिंदी की अस्मिता और राष्ट्रीय पहचान से जुड़ो मुद्‌दों पर 'सामासिक संस्कृति की प्रतीक हिंदी' और 'हिंदी है राष्ट्रीय एकता की प्रतीक' शीर्षक आलेखों में लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

हिंदी को समाज भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने वाले चुनिंदा लोगों में प्रो. गोस्वामी का नाम शुमार है। हिंदी की विभिन्न सामाजिक और भाषा-भौगोलिक विशेषताओं को उन्होंने 'हिंदी की सामाजिक शैलियाँ', 'हिंदी और पहाड़ी भाषा (भाषा और बोली के संदर्भ में)' व 'दक्खिनी भाषा और साहित्य' शीर्षक आलेखों में प्रस्तुत किया है। लेखक ने हिंदी, उर्दू और मुद्‌दे के साथ हिंदुस्तानी को हिंदी की सामाजिक शैलियाँ बताया है जो एक संवेदनशील एक भाषावैज्ञानिक यथार्थ भी है। (पृष्ठ संख्या-42)

हिंदी के सर्वधर्मी स्वरूप और सामासिक प्रकृति का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैंः *''हिंदी जितनी हिंदुओं की भाषा है उतनी ही मुसलमानों और ईसाइयों की। इसके विकास में जहाँ विद्यापति, सूर, तुलसी और बिहारी का योगदान है, वहाँ जायसी, रसखान, रहीम और अमीर खुसरो का योगदान भी कम नहीं है।''* (पृष्ठ संख्या-51)

लेखक ने मध्य पहाड़ी बोलियों के वर्ग को 'हिमाचली' कहा है तथा उसकी जातीय व सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता को रेखांकित किया है। राजस्थानी और मैथिली के भाषा संचेतना आंदोलनों के समक्ष खड़ी आधारभूत समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह कहना समीचीन होगा कि भाषा-नियोजन और भाषा मानकीकरण एक जटिल प्रक्रिया है। दक्खिनी को लेखक ने दक्कन की कई भाषाओं और बोलियों से मिली-जुली खड़ी बोली हिंदी बताया है। यहाँ लेखक ने दक्खिनी के भौगोलिक विस्तार को भी रेखांकित किया है।

इंटरनेट और सूचना-क्रांति के युग में हिंदी कंप्यूटरीकरण और मशीनीकरण से संबंधित विषयों पर हिंदी में उपलब्ध सामग्री विरल है। इस प्रकरण में 'मशीनीकरण, कंप्यूटरीकरण और हिंदी 'सूचना प्रौद्‌योगिकी के संदर्भ में' शीर्षक लेख पठनीय है। विशेषतः लेखक ने मुद्रण के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। ''भारत की भाषाएँ और हिंदी'' में लेखक ने भारत की जनगणना 2001 के भाषाई आँकड़ों पर चर्चा की है। ''भारतीय भाषा- वृक्ष'' शीर्षक आरेख (पुष्ठ संख्या-146) में लेखक ने अंडमानी भाषा परिवार को 'नीग्रो' कहा है। 'नीग्रो' एक

औपनिवेशिक और हीनतासूचक शब्द जिसका प्रयोग अब अधिकांशतः नहीं होता। साथ ही यहाँ भूलवश इस परिवार के अंतर्गत औराँव, गोंडी, पार्जी आदि को रखा गया है जो असल में केंद्रीय द्रविड़ भाषाएँ हैं।

'हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप' शीर्षक आलेख हिंदी के व्यापक अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के साथ अप्रवासी भारतीयों द्वारा हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य पर भी विहंगात्मक दृष्टि डालता है। लेखक बताते हैं कि भारत के बाहर लगभग डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। मॉरिशम और फीजी देशों में लिखे जा रहे हिंदी-साहित्य को लेखक ने कविता के उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया है। ''उच्चरित भाषा और लिखित भाषा'' शीर्षक आलेख में प्रो. गोस्वामी ने हिंदी में 'अ-लोप (Schwa Deletion) सहित अन्य स्वनिम नियमों पर महत्वपूर्ण सामग्री दी है।

हिंदी के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर लेखक ने इसके 10 विभिन्न आधारों का वर्णन किया है। 'परंपरागत व्याकरणः सीमाएँ और उपलब्धियाँ' में लेखक ने कामता प्रसाद गुरू और किशोरी दास वाजपेयी के व्याकरणों की अवधारणाओं को आधुनिक भाषाविज्ञान के परिमाणों पर परखा है। हिंदी में कोशविज्ञान के विकास को रेखांकित करता 'हिंदी के एकभाषी और द्विभाषी कोशः एक सिंहावलोकन' शीर्षक लेख कोशवैज्ञानिकों के लिए एक महत्वपूर्ण शोध सामग्री है। अंतिम आलेख राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा पर केंद्रित है। परिशिष्ट में लेखक ने 'धर्मयुग' पत्रिका (1986) में प्रकाशित अपनी शोधपरक टिप्पणी को स्थान दिया है।

कुल मिलाकर यह संकलन हिंदी के भाषिक और सामाजिक परिदृश्य को समझने में उपयोगी और पठनीय बन पड़ा है। पुस्तक को एक ऐसे दस्तावेज के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसमें हिंदी के स्वातंत्र्योत्तर इतिहास पर शोध की दिशाएँ प्रतिबिंबित होती हैं।

समीक्षक : अभिषेक अवतंस

पुस्तक : **हिंदी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य**
लेखक : **कृष्ण कुमार गोस्वामी**
प्रकाशक : **साहित्य सहकार, दिल्ली**
संस्करण : **वर्ष-2009, पृष्ठ 159**
मूल्य : **250/- रु.**